नामांक Roll No.

No. of Questions — 14

No. of Printed Pages — 7

SS—26–Raj. Sah. (Supp.)

उच्च माध्यमिक पूरक परीक्षा, 2013

SENIOR SECONDARY SUPPLEMENTARY EXAMINATION, 2013

राजस्थानी साहित्य

(RAJASTHANI SAHITYA)

समय : $3\frac{1}{4}$ घण्टे

पूर्णांक : 80

परीक्षार्थियों सारू सामान्य निर्देश :

(1) परीक्षार्थी सबसूं पैली आपरै प्रस्न पत्र माथै नामांक जरूर लिखे ।

(2) **सगला** सवाल करना जरूरी है ।

(3) हरेक सवाल रौ पड़ूत्तर उत्तर पुस्तिका में ईज लिखणो है ।

(4) जिण सवाल रा अेक सूं अधिक भाग है तो वां सगळा रा उत्तर अेक साथै लगातार लिखौ ।

(5) लेखन मांय सुद्धता अर वैज्ञानिक विवेचन करियां ज्यादा अंक दिरीजैला ।

(6) वर्तनी, व्याकरण अर सुलेख रौ विसेस ध्यान राखौ अर ओपतौ पड़ूत्तर देवौ ।

(7) उत्तर राजस्थानी भासा में ईज देवणा है ।

(8) पूर्णांक अर प्रस्नांक ठावी ढौड़ अंकित है ।

1. नीचै लिख्यां गद्यावतरणां री सप्रसंग व्याख्या करावो —

(क) मिनख री जिंनगाणी में कई घड़ी पळ इसा आवै जका उणनै ऊँचो उठा देवै अर केई घड़ी पल इसा आवै जिका उणनै पींदै बैठा देवै । आज भूरी रा आंसू अर उणरै मन रौ दु:ख रामजस नै नयो प्रकास दियो । बो हड़बड़ा'र उठयो । आख्यां फाङ–अर हाथ पसार–अर बोल्यो — भूरी । उठ, बींटो बांध अर टाबरां नै त्यार कर । इण गुलामी नै आज सूं ही नमस्कार है ।

अथवा

ऊमर सूं तो बा इसी डोकरी नीं हुई पण रोग, भूख अर अणगिण चिंतावां बीनै बैरहमी सूं कूट–कूट बींरा जीवणपान झड़का वींनै अकाळ में ई ढख'र कर दी । धांसी आवै अर लोही शरीर में खासौ भलौ सूकग्यो । चामड़ी चुस'र पींजरै रै चिपगी । लूखो–पाको साम्हो आवै जिसौ पेट में नाखै, नई तो अल्ला–अल्ला खैर सल्ला, बैठी माँख्यां उडावै अर मौत नै उडीकै । 4

(ख) म्हारां बाबूजी पैला ई करजा में कळीज रह्यां है नै हमे फेर अै उणां नै पूरा ई डुबावणी चावै सो अै काम सगा–गिनायतां रा नहीं । अै तौ दुस्मणां ज'ड़ा काम है इण रै वास्तै म्है जीवती माखी नहीं गिटूंला अर म्हनै चाहै जिता दु:ख देखणा पड़ै ।

अथवा

कथणी खांड सी मीठी हुवै तो हिवडै में इमरत घुळै, मनां रां मेळा हुवै । इण खांड में खरच कोई नी फेर भी मिनख सूम क्रिपणता करै । कागी कुण सूं लेवै अर कोयल कुण नै देवै, मीठा वचन सुणाय कै मनड़ौ हर लेवै । सो कथणी में मिठास राखौ अर राखौ उदारता । गुङ नह दे तो गुङ री सी बात तो कह । 4

(ग) ''आपां नै अठै जकी सुख-शांती दिखै है, जिको फूटरापौ दीखै है, चोखां — चोखा मन में मोवणियां चित्राम दीखै है, बै सगळां तो कोरां चिलकारां है । छिन नें अदीठ होवण-आळा है । हियै री आँखड़ल्यां सूं जोवौ थांनै रिंदरोही — रिंदरोही दीखैली । इण सुख माय कोरो दु:ख है । आणंद मांय पीड़ा है । आ पीड़ा कदैई कोनी मरै, अमर है अजर है । इण री आठ पौर चौसठ घड़ी री अनुभूति ईज माणसां नै बतावैली कै जीवण अकारथ है, बिरथां है ।''

अथवा

माधै अर सूरजड़ी उण नै आंसुवां सूं भरी बिदा दी । सूरजड़ी री इंछया हुई कै बा इण देवतां रा पग चांपलै ! पण बा बापड़ी बसका भरती रैयी । ..... आंसूड़ां टळकावती रैयी । 4

2. 'सूरज री मौत' कहाणी समाज में फैल्योड़ी आरथिक असमानता नै उजागर करै । इण कथन री समीक्षा करो । 4

3. 'मिनख जमारौ' निबन्ध रै आधार पर मिनखाजूण री महता नै खुलासै करो । 4

4. ''साहित्य जीवण नै उदात्त बणावै'' लेखक रै इण विचार सूं आप कठै तांई सहमत हो ? समझावौ । 4

5. 'हूँ गोरी किण पीव री' सामाजिक समस्या प्रधान उपन्यास है । स्पष्ट करो । 4

6. आधुनिक राजस्थानी गद्य-विधावां माथै अेक परिचयात्मक आलेख प्रस्तुत करावो । 6

7. नीचै लिख्यां विसयां मांय सूं किणी अेक विषय माथै राजस्थानी भासा में निबन्ध लिखो : 6

(i) पर्यावरण संरक्षण अर जन चेतना

(ii) म्हारी वाल्ही पोथी

(iii) राजस्थान रां तीज-त्यौहार

(iv) म्हारै सपना रौ भारत ।

8. नीचै लिख्या पद्यांसां री सप्रसंग व्याख्या करो :

(अ) उपजावै अनुराग, कोयल मन हरखित करै ।

कड़वो लागै काग, रसनां रां गुण राजिया ॥

मुख ऊपर मिठियास, घट मांही खोटा घड़ै ।

इसड़ा सूं इकळास, राखीजै मत राजिया ॥ 5

अथवा

जिण वन भूल न जावतां, गैंद गवय गिड़राज ।

तिण वन जंबुक ताखड़ा, ऊधम मंडै आज ॥

इला न देणी आपणी, हालरियां हुलराय ।

पूत सिखावै पालणै, मरण बढ़ाई माय ॥

(ब) इणमै गायौ हालरियौ, इणमें चंडी री चिरजावां ।

इणमें ऊजमणै गीत गाळ, गुण हरजस परभात्या गावां ।

अणमें ही आडी औखाणां, ओळगां भिणत वातां इणमें ।

जूनौ इतिहास जोवणौ व्है, तौ अणगिणती ख्याता इणमें । 5

अथवा

दुनियां गांठ घणी उळझावै,

तार प्रीत रां कुण सुळझावै ।

नैणां रो समदर ढुळ जावै,

कदै न कोई पाळ बंधावै ।

कुण ने मारग पूछै पंथी, लूट लेवसी ठेलौ रै,

चालण हाला चाल अेकलो, जग रो तो मन मेलौ रै ।

9. 'सीता राम चौपाई' रा अंस मुजब 'सीता-रावण' संवाद रौ सार विस्तार सूं लिखो । 5

10. 'बिरखा बीनंणी' कविता रौ भाव सौन्दर्य उजागर करावौ । 5

11. नारायण सिंह भाटी री काव्यकला री समीक्षा कलापक्ष अर भावपक्ष रै आधार माथै करावौ । 5

12. काव्य री परिभाषा अर उणरो प्रयोजन सिद्द करावो । 5

13. कुण्डलियां छन्द रौ उदाहरण साथै परिचय दिरावो । 5

14. रूपक अलंकार री परिभाषा अर उदाहरण दिरावौ । 5